मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

कांग्रेस ने प्रियंका को चुनाव परिदृश्य में लाकर गंगा पुत्र का बनारस छोड़ कर भागने का रास्ता बंद कर दिया है!

विपुल की तैयारी पैसों के दम पर	3
कांग्रेस का हाई वोल्टेज ड्रामा हो सकता है फेल	4
गंगा मुक्ति आंदोलन की ऐतिहासिकता	5
ईवीएम यानी एवरी वोट फ़ार मोदी	6
हरियाणा में बेरोजगारों से मजाक	8

वर्ष 34 अंक -11 फ़रीदाबाद 27 जनवरी-2 फ़रवरी 2019 फोन - 9999595632 ₹ 2.50

बिल्डर रामस्वरूप गांधी का पार्किंग की आड़ में टैक्स चोरी का धंधा

क्राउन प्लाजा और क्राउन इंटीरियर मॉल में जीएसटी हड़पने का गोरखधंधा

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबादः शहर में जिला प्रशासन की नाक के नीचे क्राउन प्लाजा और क्राउन इंटीरियर मॉल में पार्किंग की पर्ची काटने की आड़ में जीएसटी हड़पने का धंधा पिछले कई महीने से बेरोकटोक चल रहा है। ये दोनों मॉल सेल टैक्स वकील से बिल्डर बने आर एस गांधी के है। पार्किंग की पर्ची की आड़ में जीएसटी हड़पने के गोरखधंधे में आरएस गांधी एंड कंपनी भी पूरी तरह शामिल है, अन्यथा मॉल के कैंपस में होने वाली किसी भी अवैध और अनैतिक गतिविधि के लिए और कौन जिम्मेदार हो सकता है।

क्या है पर्ची का यह धंधा

क्राउन प्लाजा एवं क्राउन इंटीरियर मॉल में जैसे ही आपकी कार या बाइक प्रवेश करते हैं, गेट पर आपकी एक पर्ची काटी जाती है, जिसमें जीएसटी भी साथ ही वसूल लिया जाता है। औसतन एक कार या बाइक की पर्ची पर पांच रुपये जीएसटी के होते हैं। यहां तक सब ठीक रहता है।

...लेकिन वापस जाते समय आपकी गाड़ी जब एग्जिट होने लगती है तो उस गेट पर पार्किंग वाला पर्ची आपसे वापस मांग लेता है। आप आसानी से पर्ची वापस दे देते हैं क्योंकि आपको लगता है कि ऐसा करना जरूरी है ताकि वह उस पर्ची पर लिखे गए नंबर से आपकी गाड़ी का नंबर मिला ले। यहां तक भी ठीक है। लेकिन इधर आपकी गाड़ी निकली और उधर वही पर्ची फिर से एंट्री गेट पर पहुंच जाती है। वहां उस पर्ची पर पहले वाले लिखे नंबर को काटकर नई आने वाली गाड़ी का नंबर लिख दिया जाता है। औसतन एक पर्ची को इस तरह चार-पांच बार घुमाया जाता है। इस तरह आपसे हर बार जीएसटी वसूला जाता है लेकिन वह पैसा पार्किंग ठेकेदार और आरएस गांधी एंड कंपनी की जेब में जाता है।

पर्ची फाड़ने का है आदेश

नियम यह है कि वापसी पर पर्ची मांगने का अधिकार पार्किंग वाले के पास तो है लेकिन उसे फौरन ही पर्ची को फाड़कर उसे आपको वापस करना भी चाहिए। पर्ची फाड़ना इसलिए जरूरी है कि ताकि आप अपनी ही गाड़ी का दोबारा क्लेम न कर सकें। जो लोग नियमों से वाकिफ हैं या जिन्हें अपने दफ्तर में पार्किंग भत्ता वसूलना होता है, वे पर्ची को वापस भी मांग लेते हैं। पार्किंग वाला पर्ची वापस करने को बाध्य है। उसे या तो वह फाड़ कर दे या उस पर्ची पर क्रॉस का निशान लगाकर वापस करे। ताकि उस पर्ची का दुरुपयोग किसी भी रूप में न होने पाए। लेकिन यहां तो आरएस गांधी एंड कंपनी और वह पार्किंग ठेकेदार पूरी मलाई खाने के चक्कर में है। जो लोग पर्ची वापस करने के लिए अड़ते हैं, उन्हें ही काफी बहस के बाद पर्ची वापस की जाती है लेकिन अधिकतर लोग पर्ची को खुशी-खुशी देकर घर आ जाते हैं।

दो तरह की टैक्स चोरी है क्राउन प्लाजा और क्राउन इंटीरियर में

दोनों ही मॉल में एफएआर (फ्लोर एरिया रेशियो) की डकैती डालने वाले प्रॉपर्टी डीलर आरएस गांधी एंड कंपनी और ठेकेदार पार्किंग की पर्ची की आड़ में दो तरह की टैक्स चोरी कर रहे हैं। एक तरफ तो हर पर्ची पर कम से कम पांच रूपये की जीएसटी की लूट मची हुई है तो दूसरी तरफ एक ही पर्ची को चार से पांच बार घुमाने पर जो इनकम सरकारी तौर पर शो हो रही है, वह एक बार ही होती है। अगर किसी पार्किंग पर्ची को पांच बार घुमाया गया है तो उसमें सरकार के खाते में एक ही सेल का मुनाफा शो होता है लेकिन शेष चार बार का जीएसटी और इनकम ब्लैक मनी या टैक्स चोरी के रूप में जेब में जा रहा है।

क्राउन प्लाजा एवमं क्राउन इंटीरियर में रोजाना औसतन छह सौ कार पार्किंग के लिए आती हैं। जबकि शनिवार और रविवार को या खास त्यौहार आदि पर हजार-बारह सौ गाड़ियों तक पार्किंग पहुंच जाती है। कार पार्किंग का रेट 30 रूपए है। इनमें बाइक और स्कूटर शामिल नहीं हैं। एक मोटे अनुमान के मुताबिक एक मॉल से आरएस गांधी एंड कंपनी उस पार्किंग ठेकेदार के साथ मिलकर दो से तीन लाख की टैक्स चोरी हर महीने कर लेते हैं। टैक्स चोरी का ऐसा चोखा धंधा कहां मिलेगा।

क्या और मॉल में भी हो रहा है यह धंधा

मज़दूर मोर्चा के पास इन्हीं दो मॉल्स की पर्चियां पकड़ में आई हैं लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि फरीदाबाद के सभी मॉल्स में पार्किंग की पर्ची की आड़ में ऐसा गोरखधंधा न चलाया जा रहा हो। लगभग सभी मॉल्स में पेड पार्किंग है। लेकिन कुछ मॉल्स की हालत इतनी खराब है कि वहां पार्किंग फ्री है यानी वहां इतनी भीड़ नहीं है कि मॉल्स के मालिक पर्ची का यह गोरखधंधा चला सकें। लेकिन आरएस गांधी एंड कंपनी के दोनों मॉल्स में यह धंधा बखूबी चल रहा है।

इस सारे मामले में नगर निगम, पुलिस और जिला प्रशासन का पूरा हस्तक्षेप बनता है। लेकिन अफसरों को मुफ्त में फिल्म देखने या खरीददारी की आड़ में कृतार्थ होने का मौका मिलता है, इसलिए आरएस गांधी एंड कंपनी का गोरखधंधा भी चल रहा है। हैरानी तो यह है कि पुलिस के किसी अधिकारी तक की नजर में यह गोरखधंधा नहीं आया।

बताया जाता है कि जिस शख्स की फरीदाबाद के मॉल्स में पार्किंग चलती है, उसकी पार्किंग दिल्ली में भी कई जगह चलती है। हर जगह टैक्स चोरी का हथियार पार्किंग की पर्ची को ही बनाया गया है। पार्किंग ठेकेदार की राजनीतिक पहुंच भी बताई जाती है। आरएस गांधी एंड कंपनी ने पार्किंग का ठेका देते समय शर्त रखी थी कि अगर उन्हें कमाई में हिस्सा नहीं मिला तो वे उसकी पार्किंग चलने नहीं देंगे। दोनों ने एक दूसरे की भाषा समझी और पहले दिन से टैक्स चोरी से दोनों मॉल्स की शुरुआत हुई।

फ़रीदाबाद नगर निगम का भी बकायेदार

बिल्डर आरएस गांधी पर करीब 89 लाख रुपये नगर निगम फरीदाबाद की ईडीसी बनती है। यह मामला पिछले कमिश्नर मोहम्मद शाइन के समय पकड़ में आया था लेकिन समझा जाता है कि कुछ पत्रकार दलालों की मिलीभगत से इस मामले को पैसे देकर दबवा दिया गया। मोहम्मद शाइन यहां से माल कमाकर चलता बना और आरएस गांधी को तत्कालिक राहत देकर दलाल पत्रकारों को खुश भी कर दिया लेकिन नगर निगम के खाते में यह बकाया तो आज भी मौजूद है।

नगर निगम के आडिट विभाग ने अपनी जांच के दौरान पाया कि नीलम बाटा रोड पर प्लॉट नम्बर 27 व 28 को 18 नवम्बर 1993 को सीएलयू दिया गया था। उस समय सीएलयू का ईडीसी शुल्क 12 लाख रुपये बनता था, लेकिन प्लाटों की मालकिन कृष्णा गुप्ता ने इस शुल्क का 35 प्रतिशत छह लाख 15 हजार 750 रुपये जमा करा दिए । शेष राशि पांच लाख 84 हजार 250 रुपये को तीन किस्तों में जमा करने की बात कही। लेकिन आज तक इसका बकाया शुल्क जमा नहीं किया गया है।

हालांकि नगर निगम ने 14 दिसम्बर 2009 को इनके वर्तमान मालिक रामपाल तथा क्राउन कंस्ट्रशन प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक आर एस गांधी को लगभग 82 लाख रुपये का नोटिस दिया था, लेकिन इसका कोई भुगतान नहीं किया गया। आज यह राशि लगभग 89 लाख रुपये ब्याज सहित बनती है।

जींद उपचुनाव में कांग्रेस का हाई वोल्टेज ड्रामा हो सकता है फेल

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

जींदः जींद उपचुनाव में कांग्रेस ने जब पार्टी प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला को उतारा था, तब खुद पार्टी को यह अंदाजा नहीं था कि यह चुनाव इतना कड़ा इम्तिहान ले लेगा। 28 जनवरी को वोट पड़ेंगे और हालात ये हैं कि कांग्रेस प्रत्याशी तीसरे नंबर पर जाते हुए नजर आ रहे हैं। मुख्य मुकाबला भाजपा और जुमा-जुमा आठ दिन पहले आई जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के बीच सीधा-सीधा हो गया है। हालांकि अभी तीन दिन बचे हैं और हालात बदलते देर नहीं लगती है लेकिन यह चुनाव कांग्रेस के लिए वाटरलू साबित होने जा रहा है।

कांग्रेस ने हाई वोल्टेज ड्रामा बनाया

तमाम तरह की लैंड डील में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा की खासी बदनामी के बाद कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने हुड्डा को ठिकाने लगाने के लिए रणदीप को इक्के की तरह इस्तेमाल किया। रणदीप को जींद उपचुनाव में उतारकर राहुल ने यह संकेत देना चाहा कि कांग्रेस ने इस उपचुनाव को गंभीरता से लिया है और वह भूपेंद्र सिंह हुड्डा की जगह जाटों की लीडरशिप में किसी युवा को लाना चाहती है। इसके लिए रणदीप से बेहतर राहुल को कोई नजर नहीं आया। रणदीप खानदानी कांग्रेस हैं और लंबे अर्से से गांधी परिवार के ब्लू आईड ब्वॉय बने हुए थे। ...हालांकि राहुल यहां से किसी सामान्य प्रत्याशी को खड़ा कर सकते थे और फिर उसे जिताने के लिए पूरी पार्टी को जोर लगाने के लिए कहते। रणदीप का इस्तेमाल लोकसभा के साथ होने वाले या चंद महीने बाद में होने वाले हरियाणा विधानसभा के लिए हो सकता था। लेकिन राहुल ने जल्दबाजी कर दी।

भूपेंद्र सिंह हुड्डा आलाकमान के इस खेल को बखूबी समझ रहे हैं। बाहरी तौर पर वह जींद में रणदीप के साथ-साथ घूम रहे हैं और प्रचार कर रहे हैं लेकिन जिस तरह से वोट हासिल करने के लिए तिकड़में की जाती हैं, हुड्डा ने उस तरफ से आंखें बंद कर ली हैं। ऐसा नहीं है कि हुड्डा जींद के तमाम ग्रामीण इलाकों से वाकिफ नहीं हैं लेकिन जिस तरह रात-दिन एक कर उन्हें इस चुनाव में जुटना चाहिए, वैसा उन्होंने अभी तक एक भी दिन नहीं किया है।

रणदीप हारे तो नेतृत्व का सवाल खत्म

रणदीप सिंह सुरजेवाला की हार में दरअसल भूपेंद्र सिंह हुड्डा अपनी जीत देख रहे हैं। रणदीप के हारने पर हुड्डा के सामने सारी चुनौतियां खत्म हो जाएंगी और पार्टी की सत्ता में वापसी पर वह सीएम पद के एकमात्र दावेदार होंगे। रणदीप के जीतने मात्र से हुड्डा की राजनीतिक मौत तय है। रणदीप को कुछ इस अंदाज में प्रोजेक्ट करने की भी कोशिश हुई है कि वह कांग्रेस और राहुल के अगले सीएम कैंडिडेट हैं। रणदीप की उम्मीदवारी ने जींद उपचुनाव में कांग्रेस का सब कुछ दांव पर लगा दिया है। हालांकि जिसकी जरूरत नहीं थी।

सबसे बुरा हाल इनैलो का

ओमप्रकाश चौटाला की इंडियन नैशनल लोकदल की जितनी बुरी हालत जींद उपचुनाव में हुई है, ऐसी हालत उसकी कभी नहीं हुई। हालात ये हैं कि पार्टी दूर दूर तक फाइट में नहीं है। तरकश में आखिरी तीर के तौर पर अभय चौटाला दादी का विडियो भी लेकर आए। जिसमें दादी ने अजय सिंह के बेटों दिग्विजय चौटाला और दुष्यंत चौटाला के खिलाफ जमकर बुरा भला बोला। मरीज की हालत में बेड पर पड़ी दादी ने ऐसे शब्द भी कहे जो किसी दादी ने अपने पोतों के लिए शायद ही कभी बोले हों। इस विडियो की सुगबुगाहट एक-दो दिन रही लेकिन जींद के मतदाताओं को प्रभावित नहीं कर सकी। इस तरह इनैलो की यह कुत्सित कोशिश बेकार चली गई ।

आपको याद होगा कि अभय और अजय में खटकने और ओम प्रकाश चौटाला द्वारा अभय का पक्ष लिए जाने के बाद दुष्यंत और दिग्विजय ने अपनी अलग पार्टी की घोषणा की। जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) की घोषणा होने के एक हफ्ते बाद ही जींद उपचुनाव की घोषणा हो गई। जेल में सजा काट रहे अजय चौटाला के निर्देश पर जेजेपी ने पूरे दमखम के साथ जींद उपचुनाव की परीक्षा से गुजरने का फैसला लिया। हालात ये हैं कि शुरुआत में कहीं दूर तक मुकाबले में नजर नहीं आने वाली जेजेपी इस समय बीजेपी के सामने मुख्य मुकाबले में है। पार्टी अगर जीती तो इसकी जीत का श्रेय भी दुष्यंत और दिग्विजय को मिलेगा लेकिन पार्टी के पैर जमने की भी शुरुआत हो जाएगी। इसलिए चौटाला खानदान के बागी परिवार ने इस चुनाव को गंभीरता से लिया है।

जेजेपी ने आम आदमी पार्टी (आप) का समर्थन भी हासिल कर लिया है। जींद में बेशक आपकी सौ वोट हों लेकिन केजरीवाल की अपील से जेजेपी के पक्ष में एक माहौल तो बना ही है। दूसरी तरफ इनैलो तो वैसे बसपा के साथ गठबंधन में है लेकिन अभय की गतिविधियां कई बार इशारा करती हैं कि वे भाजपा से कभी भी मिल सकते हैं। जींद का मतदाता इस बारीक बात को समझ रहा है कि अभय चौटाला पूरी पार्टी के साथ कभी भी भाजपा से मिल सकते हैं। इसलिए मतदाता का झुकाव खुद ही जेजेपी की तरफ हो गया है।

भाजपा प्रत्याशी के साथ सरकार

जींद से जब डॉ. कृष्ण मिड्ढा को भाजपा ने बतौर प्रत्याशी उतारा तो उन्हें लगा कि कोई मामूली प्रत्याशी हराकर वह आसानी से चुनाव जीत लेंगे लेकिन कांग्रेस ने सारे किए पर पानी फेर दिया। नतीजा यह हुआ कि अब भाजपा प्रत्याशी को जिताने के लिए मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के निर्देश पर सारे मंत्रियों को जींद में डेरा डालना पड़ा। हर मंत्री को इलाका बांट दिया गया है। मंत्रियों से कहा गया है कि अगर यह चुनाव पार्टी हारी तो नतीजे घोषित होने के बाद सभी मंत्रियों से इस्तीफे मांग लिए जाएंगे। अब सारे के सारे मंत्री अपनी कुर्सी बचाने के लिए जींद में रातदिन जेब से पैसा खर्च कर प्रचार कर रहे हैं। खट्टर की यह रणनीति कामयाब होती नजर आ रही है। बुरी तरह एंटी इन्कमबैंसी का सामना कर रही खट्टर सरकार तमाम बदनामियों के बावजूद इस चुनाव में मुकाबले में आ गई है। अगर भाजपा का प्रत्याशी चुनाव जीत जाए तो किसी को ताज्जुब नहीं होना चाहिए।

बहरहाल, 28 जनवरी को मतदान है, कुछ तस्वीर उस दिन भी साफ होगी।